



नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 181
दि. 05.04.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

होर्मुज जलडमरूमध्य पर ईरान का नया रणनीतिक फॉर्मूला: मित्र, तटस्थ और शत्रु देशों के लिए अलग नियम

तेहरान। फारस की खाड़ी में होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर ईरान ने एक नई रणनीतिक योजना तैयार की है, जो अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों और वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा पर गहरा असर डाल सकती है। ईरानी अधिकारियों के अनुसार, इस योजना के तहत जलडमरूमध्य से गुजरने वाले सभी पोतों को उनकी देशों के साथ ईरान के राजनीतिक और कूटनीतिक संबंधों के आधार पर तीन श्रेणियों—'मित्र', 'तटस्थ' और 'शत्रु'—में वर्गीकृत किया जाएगा। इस कदम का उद्देश्य ईरान को क्षेत्रीय सशक्तिकरण देना, विदेशी पोतों पर नियंत्रण रखना और अपने बंदरगाहों तक सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करना बताया जा रहा है। योजना के अनुसार, मित्र देशों के पोतों को पूरी तरह से खुला मार्ग मिलेगा और उन्हें किसी प्रकार के शुल्क या प्रतिबंध का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसके विपरीत, शत्रु देशों के पोतों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की

अनुमति नहीं दी जाएगी। तटस्थ देशों के पोतों को तो गुजरने दिया जाएगा, लेकिन इसके लिए उन्हें भारी रास्ता शुल्क अदा करना होगा। इस नई रणनीति से ईरान न केवल अपने राजनीतिक विरोधियों को निर्बल करने का साधन पा रहा है, बल्कि तटस्थ देशों से आर्थिक लाभ भी सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा है। अभी तक ईरान ने इन तीनों श्रेणियों में शामिल देशों की पूरी सूची सार्वजनिक नहीं की है। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्टों और विशेषज्ञों के अनुसार, फारस की खाड़ी के अधिकांश अरब देशों को तटस्थ या शत्रु राष्ट्रों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि इस क्षेत्र के पोतों को या तो भारी शुल्क देना होगा या जलडमरूमध्य से पूरी तरह से गुजरने पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ेगा। इस रणनीति का ऐतिहासिक और भू-राजनीतिक संदर्भ भी है। फरवरी के अंत में



अमेरिका और इजराइल द्वारा ईरान के कई सैन्य और ऊर्जा संबंधी ठिकानों पर हमले किए गए थे, जिससे ईरानी क्षेत्र में तनाव बढ़ गया। इसके जवाब में ईरान ने इजराइल और पश्चिमी देशों के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया, और इस तनाव के चलते होर्मुज जलडमरूमध्य को ईरान ने आंशिक रूप से बंद कर दिया। यह जलमार्ग दुनिया के तेल और तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) आपूर्ति का प्रमुख मार्ग है, और इसके प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल और गैस की कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई। ईरान के इस निर्णय ने वैश्विक तेल और ऊर्जा बाजार को झकझोर दिया है।

होर्मुज जलडमरूमध्य से दुनिया के प्रमुख निर्यातक देशों का तेल पश्चिमी बाजारों तक पहुंचता है। यदि यह मार्ग पूरी तरह से या आंशिक रूप से बंद रहता है, तो तेल की आपूर्ति में बाधा आएगी और अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार अस्थिर हो जाएगा। तेल उत्पादन और निर्यात प्रभावित होने से वैश्विक स्तर पर कीमतों में तेजी आएगी, जो आर्थिक और राजनीतिक तनाव को और बढ़ा सकता है। ईरान ने हालांकि यह भी स्पष्ट किया है कि जरूरी और मानवतावादी कारणों से पोतों की आवाजाही को अनुमति दी जाएगी। तसनीम समाचार एजेंसी के अनुसार, ईरान ने अपने बंदरगाहों तक आवश्यक सामान और आपूर्ति ले जाने वाले पोतों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की अनुमति दी है। इसमें ओमान की खाड़ी में मौजूद पोत भी शामिल हैं। इन पोतों को जलडमरूमध्य से गुजरने के लिए ईरानी अधिकारियों के साथ समन्वय करना होगा और निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन

करना होगा। इस कदम का उद्देश्य वैश्विक व्यापार और मानवतावादी जरूरतों को पूरी तरह बाधित न होने देना बताया जा रहा है। रणनीति दोहरी है। एक तरफ यह अपने विरोधियों को सीधे तौर पर दबाने का साधन है, तो दूसरी ओर यह तटस्थ देशों से आर्थिक लाभ सुनिश्चित करने का अवसर प्रभुत्व बनाए रखने और अंतरराष्ट्रीय पोतों पर नियंत्रण रखने में सक्षम है। हालांकि, इस कदम के वैश्विक प्रभाव भी गंभीर हो सकते हैं। तेल और गैस की अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति में बाधा आने से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ सकता है। विशेषकर यूरोप, अमेरिका और एशियाई देशों के ऊर्जा सुरक्षा रणनीति को यह चुनौती दे सकती है। इसके अलावा, इस प्रकार की कूटनीतिक और सैन्य

रणनीति क्षेत्रीय तनाव को बढ़ाने और समुद्री विवादों को जन्म देने की संभावना को भी बढ़ा देती है। ईरान के इस फॉर्मूले ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय में चिंता बढ़ा दी है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक संगठनों को इस मुद्दे पर ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि होर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया की ऊर्जा आपूर्ति और समुद्री व्यापार का अहम मार्ग है। किसी भी तरह का व्यवधान वैश्विक अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित कर सकता है। इस बीच, ईरान के साथ दोस्ताना संबंध रखने वाले देश इस नीति से लाभ उठा सकते हैं। उनके पोत बिना किसी रोक-टोक के होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजर पाएंगे। वहीं तटस्थ देशों के लिए यह नीति महंगी साबित हो सकती है और शत्रु देशों के लिए पूरी तरह से गुजरना मुश्किल हो जाएगा। यह रणनीति क्षेत्रीय शक्ति संतुलन, आर्थिक लाभ और वैश्विक राजनीति के परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती है।

इस फॉर्मूले के लागू होने के बाद फारस की खाड़ी और विश्व बाजार पर ईरान का प्रभाव और भी बढ़ सकता है। जबकि यह कदम ईरान के लिए रणनीतिक रूप से फायदेमंद है, इसके कारण वैश्विक व्यापारिक साझेदारों और अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों के लिए जोखिम बढ़ सकता है। ऐसे में यह देखना होगा कि अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून और कूटनीतिक बातचीत इस तनावपूर्ण स्थिति को किस प्रकार नियंत्रित कर सकती है। संक्षेप में, ईरान का होर्मुज जलडमरूमध्य फॉर्मूला भू-राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण कदम है। यह योजना न केवल ईरान को क्षेत्रीय प्रभुत्व देने का प्रयास है, बल्कि वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री व्यापार और अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर गहरा असर डाल सकती है। इस नई रणनीति के परिणामों पर पूरी दुनिया की निगाहें लगी हुई हैं, और यह तय करेगा कि फारस की खाड़ी में शक्ति संतुलन किस दिशा में बदलता है।

तीन-भाषा नीति पर केंद्र-तमिलनाडु आमने सामने: शिक्षा का विवाद और राजनीति

नई दिल्ली। भारत में शिक्षा और भाषा नीति को लेकर एक बार फिर राजनीतिक गरमाहट देखने को मिल रही है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मदेव प्रधान और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बीच 'श्री लैंग्वेज पॉलिसी' को लेकर तीखा विवाद सामने आया है। इस मुद्दे ने न केवल केंद्र और राज्य के बीच मतभेद को उजागर किया है, बल्कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन और भाषाई विविधता के महत्व पर भी बहस तेज कर दी है। मुख्यमंत्री स्टालिन ने इसे 'हिंदी थोपने की कोशिश' करार दिया, जबकि केंद्रीय मंत्री धर्मदेव प्रधान ने इन आरोपों को पूरी तरह से खारिज किया और इसे केवल 'वोट बैंक की राजनीति' बताते हुए कहा कि यह किसी भाषा के लिए खतरा नहीं बल्कि शिक्षा और अवसरों को बढ़ाने का साधन है। धर्मदेव प्रधान ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर अपने संदेश में स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) छात्रों की भाषाई स्वतंत्रता का दस्तावेज है। उन्होंने कहा कि इसमें मातृभाषा को प्राथमिकता दी गई है और किसी भी भाषा को अनिवाद्य रूप से थोपने का प्रयास नहीं



किया गया है। उनके अनुसार बहुभाषावाद से छात्रों के अवसर बढ़ते हैं और इससे भारतीय भाषाओं का संरक्षण और विकास होता है। उन्होंने यह भी कहा कि तमिलनाडु सरकार इस नीति के लचीले ढांचे को गलत तरीके से 'अनिवाद्य हिंदी' के रूप में पेश कर रही है, जिससे छात्रों के सीखने और करियर के अवसर प्रभावित हो सकते हैं। केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने इस मुद्दे पर तमिलनाडु सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने कुछ प्रमुख शिक्षा योजनाओं में सहयोग नहीं किया। उन्होंने विशेष रूप से पीएम श्री स्कूल योजना और नवोदय विद्यालयों की स्थापना में बाधाएं खड़ी करने का आरोप लगाया। उनका कहना था कि ये बाधाएं छात्रों के हितों के खिलाफ हैं

और उन्हें बेहतर शिक्षा और अवसर से वंचित कर सकती हैं। धर्मदेव प्रधान ने मुख्यमंत्री स्टालिन से अपील की कि वे राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय शिक्षा सुधार में सहयोग करें और सभी भाषाओं को समान रूप से सशक्त बनाने के प्रयास में भाग लें। इस विवाद के पीछे गहराई में देखने पर यह स्पष्ट होता है कि तमिलनाडु हमेशा से केंद्रीय भाषा नीतियों को लेकर सतर्क रहा है। राज्य ने हमेशा से अपनी मातृभाषा तमिल के महत्व पर जोर दिया है और कभी भी हिंदी को अनिवाद्य रूप से थोपने का विरोध किया है। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने भी कहा कि तमिलनाडु की जनता और राज्य सरकार ने कुछ प्रमुख शिक्षा योजनाओं में सहयोग नहीं किया। उन्होंने विशेष रूप से पीएम श्री स्कूल योजना और नवोदय विद्यालयों की स्थापना में बाधाएं खड़ी करने का आरोप लगाया। उनका कहना था कि ये बाधाएं छात्रों के हितों के खिलाफ हैं

केरल विधानसभा चुनाव में प्रिंट मीडिया पर सख्ती: मतदान से पहले विज्ञापन पर नई रोक

तिरुवनंतपुरम। केरल विधानसभा चुनाव के मद्देनजर निर्वाचन आयोग ने प्रिंट मीडिया पर राजनीतिक विज्ञापनों पर सख्त नियंत्रण की घोषणा की है। आयोग ने स्पष्ट किया है कि आठ और नौ अप्रैल को कोई भी राजनीतिक दल या उम्मीदवार बिना पूर्व अनुमति के अखबारों, पत्रिकाओं या किसी प्रकाशन में विज्ञापन प्रकाशित नहीं कर सकेगा। यह कदम चुनावी निष्पक्षता और शांतिपूर्ण मतदान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उठाया गया है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी रतन यू केलकर के आदेश के अनुसार, सभी प्रिंट विज्ञापनों को मीडिया प्रमाणन एवं निगरानी समिति (एम्सीएमसी) से पूर्व-सर्टिफिकेशन लेना अनिवार्य होगा। इस स्वीकृति को राज्य या जिला स्तर पर प्राप्त किया जा सकता है। आयोग का मानना है कि चुनाव के अंतिम चरण में भ्रमक, आपत्तिजनक या भड़काऊ विज्ञापन पूरे चुनावी माहौल को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे विज्ञापन न केवल मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित करते हैं, बल्कि विरोधी पक्ष को उसका जवाब देने का उचित समय भी नहीं मिलता। इससे चुनाव की निष्पक्षता और लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। निर्वाचन आयोग ने यह निर्देश अनुच्छेद 324

के तहत जारी किया है, जो आयोग को चुनाव की निगरानी, निर्देशन और नियंत्रण का अधिकार प्रदान करता है। आदेश में स्पष्ट किया गया है कि राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को प्रिंट विज्ञापन प्रकाशित करने से कम से कम दो दिन पहले एम्सीएमसी के पास स्वीकृति लेनी होगी। निर्वाचन आयोग ने मीडिया houses को भी निर्देश दिए हैं कि वे किसी भी विज्ञापन को प्रकाशित करने से पहले प्रमाणन प्रक्रिया की पूर्ण करें। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम चुनावी निष्पक्षता की दिशा में महत्वपूर्ण है। मतदान से पहले प्रचार के दबाव में अक्सर गलत सूचना, अपशब्द या भड़काऊ सामग्री प्रकट होती है। ऐसे में आयोग द्वारा प्री-सर्टिफिकेशन का प्रावधान न केवल गलत जानकारी को रोकेंगा, बल्कि राजनीतिक दलों को भी जिम्मेदार प्रचार के लिए प्रेरित करेगा। इससे मतदाता अधिक सचेत और पत्रिकाओं में बड़े विज्ञापन छक्काते हैं। हालांकि, आयोग का ध्यान यह सुनिश्चित करना है कि इस प्रक्रिया में कोई भी दल या उम्मीदवार अनुचित लाभ न ले सके और मतदाता निष्पक्ष जानकारी प्राप्त करें। आयोग ने मीडिया संस्थानों से भी आग्रह किया है कि वे इस दिशा-निर्देश का पालन करें और बिना एम्सीएमसी की मंजूरी के किसी विज्ञापन को प्रकाशित न करें।

इसके अलावा, आयोग ने चेतावनी दी है कि किसी भी उल्लंघन की स्थिति में संबंधित राजनीतिक दल या उम्मीदवार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। इसमें वित्तीय जुर्माना, विज्ञापन की तत्काल रोकथाम और आवश्यकतानुसार अन्य कानूनी कदम शामिल हैं। निर्वाचन आयोग ने मीडिया houses को भी निर्देश दिए हैं कि वे किसी भी विज्ञापन को प्रकाशित करने से पहले प्रमाणन प्रक्रिया की पूर्ण करें। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम चुनावी निष्पक्षता की दिशा में महत्वपूर्ण है। मतदान से पहले प्रचार के दबाव में अक्सर गलत सूचना, अपशब्द या भड़काऊ सामग्री प्रकट होती है। ऐसे में आयोग द्वारा प्री-सर्टिफिकेशन का प्रावधान न केवल गलत जानकारी को रोकेंगा, बल्कि राजनीतिक दलों को भी जिम्मेदार प्रचार के लिए प्रेरित करेगा। इससे मतदाता अधिक सचेत और पत्रिकाओं में बड़े विज्ञापन छक्काते हैं। हालांकि, आयोग का ध्यान यह सुनिश्चित करना है कि इस प्रक्रिया में कोई भी दल या उम्मीदवार अनुचित लाभ न ले सके और मतदाता निष्पक्ष जानकारी प्राप्त करें। आयोग ने मीडिया संस्थानों से भी आग्रह किया है कि वे इस दिशा-निर्देश का पालन करें और बिना एम्सीएमसी की मंजूरी के किसी विज्ञापन को प्रकाशित न करें।

या उम्मीदवार अनुचित प्रचार या भ्रमक संदेश के माध्यम से मतदाताओं को प्रभावित न कर सके। इस नीति के तहत प्रिंट मीडिया में विज्ञापन छपवाने से पहले उम्मीदवारों को सभी सामग्री को एम्सीएमसी के पास भेजना होगा, जिसमें विज्ञापन का पाठ, चित्र, ग्राफिक्स और किसी भी प्रकार का संदेश शामिल है। एम्सीएमसी इन सभी सामग्रियों की समीक्षा करेगा और तय करेगा कि कहीं यह भड़काऊ, आपत्तिजनक या भ्रमक तो नहीं है। इसके बाद ही विज्ञापन को प्रकाशित करने की अनुमति दी जाएगी। निर्वाचन आयोग ने यह भी स्पष्ट किया है कि इस निर्देश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाएगी और चुनाव प्रक्रिया में निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए कानूनी प्रवधानों का पालन किया जाएगा। इस दिशा-निर्देश से यह संदेश भी जाता है कि चुनाव आयोग हर स्तर पर मतदाता और लोकतंत्र की रक्षा के लिए सक्षम है। इस प्रकार, केरल विधानसभा चुनाव के अंतिम चरण में प्रिंट मीडिया पर सख्त नियंत्रण और विज्ञापन की पूर्ण स्वतंत्रता का प्रावधान न केवल मतदाता की सूचना की गुणवत्ता बढ़ाएगा, बल्कि राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को जिम्मेदार प्रचार के लिए बाध्य करेगा।

बुशहर परमाणु संयंत्र पर अमेरिका-इजरायल का हमला ईरान में बढ़ा तनाव, सुरक्षा और मानवाधिकार खतरे में

तेहरान। ईरान के बुशहर में स्थित परमाणु संयंत्र और आसपास के बुनियादी ढांचे पर शनिवार को अमेरिका और इजरायल द्वारा किए गए मिसाइल और हवाई हमलों ने पूरे क्षेत्र में राजनीतिक और सुरक्षा के माहौल को हड़कंप में डाल दिया है। इस हमले में दो लोगों की मौत हुई और आधा दर्जन लोग घायल हुए। ईरान की तसनीम समाचार एजेंसी के अनुसार, बुशहर परमाणु संयंत्र के परिसर के पास एक प्रोजेक्टाइल गिरा, जिससे सुरक्षा कर्मी की जान चली गई। आईईएफ ने भी इस हमले की पुष्टि की है और बताया कि संयंत्र से रेडिएशन का कोई लीक नहीं हुआ और उत्पादन सामान्य रूप से जारी है। बुशहर परमाणु संयंत्र ईरान के ऊर्जा और औद्योगिक ढांचे का एक अहम हिस्सा है, और इसे अंतरराष्ट्रीय निगरानी एजेंसी आईईएफ द्वारा सतत निगरानी में रखा जाता है। हालात के बावजूद संयंत्र के मुख्य हिस्सों को कोई गंभीर नुकसान नहीं पहुंचा है। आईईएफ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए बताया कि सुरक्षा कर्मी की मौत प्रोजेक्टाइल के टुकड़ों की चपेट में आने से हुई और संयंत्र के भवन में मामूली क्षति आई है, लेकिन रेडिएशन के स्तर में कोई वृद्धि नहीं हुई।



हमले की श्रृंखला केवल बुशहर तक सीमित नहीं रही। ईरान-इराक सीमा पर स्थित व्यापार टर्मिनल, जो दक्षिण-पश्चिमी शहर खोरमशहर के शालमचेह चौकी में है, पर भी अमेरिकी और इजरायली हवाई हमले हुए। इस हमले में एक इराकी ड्राइवर की मौत हुई और दो ईरानी मजदूर घायल हुए। दक्षिणी ईरान के होर्माजगान प्रांत में स्थित एक सीमेंट

बनाने के साथ-साथ फारस की खाड़ी में शक्ति संतुलन को बदलने की रणनीति का हिस्सा हो सकता है। इससे क्षेत्रीय तनाव बढ़ सकता है और ईरान के पड़ोसी देशों, विशेषकर इराक, ओमान और खाड़ी के अरब देशों में सुरक्षा चिंता पैदा हो सकती है। हमले के दौरान बुशहर में सुरक्षा कर्मियों की मौत और घायल होने वाले लोग यह याद दिलाते हैं कि परमाणु और औद्योगिक हमले सिर्फ भौतिक नुकसान नहीं पहुंचाते, बल्कि मानव जीवन और स्थानीय समुदायों को भी गंभीर खतरे में डालते हैं। इससे क्षेत्रीय राजनीतिक नेतृत्व के लिए तत्काल निर्णय लेना और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के जरिए सुरक्षा सुनिश्चित करना जरूरी हो जाता है। ईरान के बुशहर परमाणु संयंत्र पर यह हमला वैश्विक राजनीति, क्षेत्रीय सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार के लिहाज से बेहद संवेदनशील मामला बन गया है। संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की निगाहें इस पर टिक गई हैं कि आगे की घटनाएं किस दिशा में बढ़ती हैं। सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति और क्षेत्रीय राजनीति को देखते हुए यह घटना फारस की खाड़ी के लिए नए संकट और संभावित संघर्ष का संकेत देती है। इस पूरे घटनाक्रम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि फारस की खाड़ी में सुरक्षा और परमाणु स्थिरता अब केवल स्थानीय नहीं, बल्कि वैश्विक चिंता का विषय बन चुकी है। बुशहर पर हमले ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और ऊर्जा सुरक्षा पर दबाव बढ़ा दिया है और इस क्षेत्र में आगे कुछ हफ्तों में राजनीतिक और सैन्य गतिविधियों की तीव्रता बढ़ने की संभावना है।

नवसर्जन संस्कृति हिन्दी

JioTV CHENNAL NO. 2063

Jio Air Fiber

Jio tv +

Jio Fiber

Daily Hunt

ebaba Tv

Dish Plus

DTH live OTT

Rock TV

Airtel

Amezone Fire

Roku Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये

संपादकीय

संवैधानिक संस्थाओं की अग्निपरीक्षा

पश्चिम बंगाल में विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के तहत निर्वाचन नामावलियों के निस्तारण में लगे, सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त न्यायिक अधिकारियों को नौ घंटे तक बंधक बनाया जाना दुर्भाग्यपूर्ण ही है। इन सात बंधक अधिकारियों में तीन महिलाएं भी शामिल थीं जिन्हें नौ घंटे तक बिना खाना-पानी के रोके रखा गया। स्वाभाविक रूप से इस घटना पर सुप्रीम कोर्ट ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव व डीजीपी समेत कई उच्च अधिकारियों का कारण बताओ नोटिस भी दिए हैं। उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर प्रक्रिया को पूरा करने के लिए सात अप्रैल की तिथि निर्धारित की है। पिछले महीने तक साठ लाख में 47 लाख आपत्तियों का निस्तारण होने पर सुप्रीम कोर्ट ने भी संतुष्टि व्यक्त की है। बहरहाल, इसके बावजूद एसआईआर प्रक्रिया को लेकर किसी व्यक्ति को कोई शिकायत है तो उसका निस्तारण निर्धारित प्रक्रिया से ही किया जा सकता है। बहरहाल, मालदा का यह घटनाक्रम कानून व्यवस्था और संवैधानिक संस्थाओं के लिए भी अग्निपरीक्षा है। यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने पश्चिम बंगाल को राजनीतिक रूप से धुँवीकृत तथा चुनाव आयोग ने राज्य में जंगलराज होने की बात कही है। ध्यान रहे कि इससे पहले भी निर्वाचन अधिकारियों से मारपीट व घेराव की घटनाएं सामने आई हैं। जाहिर बात है कि पश्चिम बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया को लेकर कुछ लोगों में असंतोष है। मतदाता सूची से नाम कटने वाले लोगों की तल्लख प्रतिक्रिया स्वाभाविक है। लेकिन यह तंत्र के प्रति बढ़ते अविश्वास का भी प्रतीक है, जिसके चलते ही घटनाक्रम के बाद सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी ने पश्चिम बंगाल में इस महीने होने वाले चुनाव से पहले कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं। अब राज्य में विधानसभा चुनाव होने में कुछ ही दिन बाकी हैं। उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल में इस माह की 23 व 29 अप्रैल को मतदान होना है। ऐसे में मालदा का घटनाक्रम निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया के लिए चुनौती दर्शाने वाला है।

बहरहाल, मालदा के कालियाचक में भीड़ द्वारा अभिव्यक्त आक्रोश और न्यायिक अधिकारियों को बंधक बनाने का घटनाक्रम यह बताता है कि लोगों में एसआईआर प्रक्रिया को लेकर व्यापक असंतोष है। यद्यपि कानून व्यवस्था को हाथ में लेना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता है, लेकिन स्थानीय पुलिस प्रशासन द्वारा पहले ही घटना का आकलन न कर पाना और समय रहते कार्रवाई न करना, तंत्र की विफलता को ही दर्शाता है। जिसे कानून व्यवस्था की नाकामी ही कहा जा सकता है। जब राज्य में एसआईआर काम में लगे लोगों को पहले से लोगों के आक्रोश का सामना करना पड़ रहा था, तो इस कार्य में लगे न्यायिक अधिकारियों की सुरक्षा की चाक-चौबंद व्यवस्था की जानी चाहिए थी। लोगों में उपजे अविश्वास के प्रदेनजर इस दिशा में सतर्क पहल जरूरी है। इसमें दो राय नहीं कि पश्चिम बंगाल में जल्दवर्ष पैमाने पर विदेशियों की चुसपट की समस्या रही है। ऐसे में एसआईआर प्रक्रिया द्वारा मतदाताओं की पड़ताल राष्ट्रीय सुरक्षा का भी महत्वपूर्ण विषय है। लेकिन जटिल प्रक्रिया के चलते व जरूरी कागजों के उपलब्ध न होने से कुछ वैध मतदाताओं को अपनी वैधता की पुष्टि के लिए परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चिंताओं को भी समझने की जरूरत है। ऐसे मतदाताओं के अविश्वास को भी दूर करने की जरूरत है। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट इस प्रक्रिया पर शुरू से ही नजर बनाये हुए है। चुनाव आयोग भी दावा कर रहा है कि किसी योग्य मतदाता के साथ अन्याय नहीं होगा। इसी मकसद से ही सुप्रीम कोर्ट ने प्रक्रिया पर निगरानी के मकसद से न्यायिक अधिकारियों को तैनाती की थी। लेकिन विडंबना है कि उन्हीं आक्रोशित भीड़ ने बंधक बनाया। लेकिन इसके बावजूद सरकारी तंत्र को लोगों के बीच भरोसा कायम करने का प्रयास करना चाहिए। विश्वास किया जाना चाहिए कि राज्य के राजनीतिक दल इस मुद्दे को लेकर राजनीति करने के बजाय मतदाताओं को तर्कपूर्ण ढंग से स्वतंत्र व पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया में शामिल होने के लिये प्रेरित करेंगे। राज्य में स्वतंत्र-निष्पक्ष तथा पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया के लिए राजनेतों का संवेदनशील व्यवहार जरूरी है।

अभियान

धौलाधार की गोद में दिव्य आह्वान: चामुंडा देवी धाम का रहस्य और आस्था की जीवंत कथा

हिमाचल प्रदेश की पवित्र वादियों में बसा चामुंडा देवी धाम केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि आस्था, रहस्य और भी चुनौतीपूर्ण होती चली गई। दिव्य अनुभूति का अद्भुत संगम है। धौलाधार पर्वतमाला की चर्च से ढकी चोटियों के बीच, बनेर नदी के शांत प्रवाह के किनारे स्थित यह धाम हर उस व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है, जो केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव की तलाश में होता है। यहां की वायु में एक अलग ही प्रकार की ऊर्जा महसूस होती है—मानो स्वयं का मार्गदर्शन कर रही हो। चामुंडा देवी मंदिर का इतिहास जितना प्राचीन है, उतना ही रहस्यमय भी है। यह स्थान आज जिस रूप में हमारे सामने है, यह केवल स्थापत्य कला का परिणाम नहीं, बल्कि एक दिव्य संकेत का प्रतीक है। कहा जाता है कि प्रारंभ में माता चामुंडा का मंदिर धौलाधार पर्वत श्रृंखला के ऊंचे स्थान पर स्थित था, जहां तक पहुंचना अत्यंत कठिन था। ऊबड़-खाबड़ रास्ते, कठिन चढ़ाई और प्राकृतिक बाधाएं भक्तों के लिए बड़ी परीक्षा बन जाती थीं। लेकिन आस्था का मार्ग कभी सरल नहीं होता—यह तो श्रद्धा की परीक्षा ही होती है।

समय के साथ भक्तों की संख्या बढ़ती गई और उनके लिए यह कठिन यात्रा और भी चुनौतीपूर्ण होती चली गई। तब उस क्षेत्र के राजा और एक श्रद्धालु पुजारी ने मिलकर देवी से प्रार्थना की कि वह अपने स्थान को ऐसे स्थान पर स्थापित करने की अनुमति दें, जहां आम जन भी आसानी से पहुंच सकें। देव प्रार्थना केवल सुविधा की मांग नहीं थी, बल्कि यह एक सच्ची भक्ति का निवेदन था। कहानी का सबसे अद्भुत और रहस्यमय भाग यहीं से शुरू होता है। एक रात पुजारी को स्वप्न में देवी चामुंडा के दर्शन हुए। यह कोई सामान्य स्वप्न नहीं था, बल्कि एक दिव्य आदेश था। देवी ने उन्हें स्पष्ट निर्देश दिया कि वर्तमान स्थान पर खुदाई की जाए, जहां उनकी मूर्ति छिपी हुई है। यह स्वप्न इतना सजीव और प्रभावशाली था कि पुजारी ने इसे केवल कल्पना मानकर नजरअंदाज नहीं किया, बल्कि इसे देवी का आदेश मानकर राजा को इसकी जानकारी दी। राजा ने भी इस बात को गंभीरता से लिया और उस स्थान पर खुदाई का कार्य प्रारंभ करवाया गया। जैसे-जैसे खुदाई आगे बढ़ी, वैसे-वैसे लोगों की उत्सुकता भी बढ़ती गई। और फिर वह

क्षण आया, जब धरती के गर्भ से माता की दिव्य मूर्ति प्रकट हुई। यह दृश्य वहां उपस्थित सभी लोगों के लिए एक चमत्कार से कम नहीं था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं धरती माता ने देवी को अपने भीतर सुरक्षित रखा था, ताकि सही समय आने पर वह प्रकट हो सकें। लेकिन इस चमत्कार के साथ एक और रहस्य जुड़ा हुआ था। जब सैनिकों ने उस मूर्ति को उठाया के साथ प्रयास किया, तो वे असफल रहे। चाहे कितनी भी कोशिश की गई, मूर्ति अपने स्थान से हिली तक नहीं। यह देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। तभी पुनः पुजारी को स्वप्न में देवी के दर्शन हुए और उन्होंने कहा कि इस मूर्ति को केवल वही स्थापित कर सकता है, जिसे उन्होंने स्वयं चुना है। देवी के आदेशानुसार, पुजारी ने स्वयं उस मूर्ति को उठाया और उसे वर्तमान स्थान पर स्थापित किया। यह घटना इस बात का प्रमाण मानी जाती है कि देवी की इच्छा के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं होता। इस प्रकार चामुंडा देवी मंदिर का वर्तमान स्वरूप अस्तित्व में आया, जो आज लाखों भक्तों की आस्था का केंद्र बना हुआ है। इस मंदिर की

एक ओर विशेषता है इसके पीछे स्थित प्राकृतिक गुफा, जिसे शिव और शक्ति का संयुक्त स्थान माना जाता है। इस गुफा में नंदीकेशवर महादेव का शिवलिंग स्थापित है, जिसके दर्शन के लिए भक्त दूर-दूर से आते हैं। यह स्थान केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि ध्यान और साधना का केंद्र भी है। यहां बैठकर जब कोई साधक ध्यान करता है, तो उसे एक अद्भुत शांति और ऊर्जा का अनुभव होता है। इसी कारण इस धाम को चामुंडा नंदीकेशवर धाम के नाम से भी जाना जाता है। यह नाम स्वयं में शिव और शक्ति के अद्वैत स्वरूप का प्रतीक है—जहां शक्ति बिना शिव अधूरी है और शिव बिना शक्ति निष्क्रिय। यह गुफा इस आध्यात्मिक सत्य का प्रत्यक्ष प्रमाण मानी जाती है। मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही भक्तों का ध्यान सबसे पहले माता चामुंडा की भव्य प्रतिमा की ओर जाता है। उनके चेहरे की गंभीरता और करुणा दोनों एक साथ अनुभव होती हैं। ऐसा लगता है मानो माता हर भक्त के मन की बात जानती हों और उसे आशीर्वाद दे रही हों। मंदिर के दोनों ओर भैरव जी और हनुमान जी की प्रतिमाएं स्थापित हैं,

जिन्हें माता के रक्षक और प्रतिनिधि के रूप में पूजा जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, चामुंडा देवी का संबंध एक अत्यंत प्राचीन कथा से जुड़ा हुआ है। हजारों वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में चण्ड और मुण्ड नामक दो अत्यंत शक्तिशाली राक्षसों का आतंक था। वे निर्दोष लोगों को सताते और पूरे क्षेत्र में पथ का वातावरण बना देते थे। तब देवी ने काली का उग्र रूप धारण किया और दोनों राक्षसों के साथ भीषण युद्ध किया। यह युद्ध केवल शारीरिक शक्ति का नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष का प्रतीक था। अंततः देवी ने चण्ड और मुण्ड का वध कर दिया और इस प्रकार इस क्षेत्र को उनके आतंक से मुक्त किया। इसी विजय के कारण देवी को 'चामुंडा' नाम से जाना जाने लगा—चण्ड और मुण्ड का संहार करने वाली शक्ति। यह कथा हमें यह सिखाती है कि जब भी अधर्म अपनी सीमा पार करता है, तब दिव्य शक्ति किसी न किसी रूप में प्रकट होकर उसे समाप्त करती है। यह केवल एक पौराणिक कहानी नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक सत्य है, जो हर युग में लागू होता है।

चामुंडा देवी धाम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां आने वाला हर व्यक्ति केवल दर्शक बनकर नहीं जाता, बल्कि एक अनुभूति लेकर लौटता है। यहां की शांति, प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं, जो मन को भीतर तक छू जाता है। धौलाधार की ऊंची चोटियां, बनेर नदी का मधुर प्रवाह और मंदिर की चट्टियों की ध्वनि—ये सब मिलकर एक ऐसा संगम बनाते हैं, जो किसी भी व्यक्ति को आत्मिक शांति प्रदान करता है। यही कारण है कि यहां हर दिन हजारों की संख्या में भक्त पहुंचते हैं, और हर कोई अपने साथ एक नई ऊर्जा और विश्वास लेकर लौटता है। अंततः, चामुंडा देवी मंदिर केवल एक तीर्थ स्थल नहीं, बल्कि यह एक जीवंत अनुभव है—एक ऐसा स्थान जहां आस्था और रहस्य एक साथ मिलकर जीवन के गहरे सत्य को प्रकट करते हैं। यह हमें यह सिखाता है कि जब श्रद्धा सच्ची होती है, तो स्वयं देवी मार्ग दिखाती है, चाहे वह स्वयं के माध्यम से ही क्यों न हो। यही इस धाम का सबसे बड़ा रहस्य और सबसे बड़ी शक्ति है।

चामुंडा देवी धाम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां आने वाला हर व्यक्ति केवल दर्शक बनकर नहीं जाता, बल्कि एक अनुभूति लेकर लौटता है। यहां की शांति, प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं, जो मन को भीतर तक छू जाता है। धौलाधार की ऊंची चोटियां, बनेर नदी का मधुर प्रवाह और मंदिर की चट्टियों की ध्वनि—ये सब मिलकर एक ऐसा संगम बनाते हैं, जो किसी भी व्यक्ति को आत्मिक शांति प्रदान करता है। यही कारण है कि यहां हर दिन हजारों की संख्या में भक्त पहुंचते हैं, और हर कोई अपने साथ एक नई ऊर्जा और विश्वास लेकर लौटता है। अंततः, चामुंडा देवी मंदिर केवल एक तीर्थ स्थल नहीं, बल्कि यह एक जीवंत अनुभव है—एक ऐसा स्थान जहां आस्था और रहस्य एक साथ मिलकर जीवन के गहरे सत्य को प्रकट करते हैं। यह हमें यह सिखाता है कि जब श्रद्धा सच्ची होती है, तो स्वयं देवी मार्ग दिखाती है, चाहे वह स्वयं के माध्यम से ही क्यों न हो। यही इस धाम का सबसे बड़ा रहस्य और सबसे बड़ी शक्ति है।

जयपुर में गन हाउस की आड़ में हथियारों का काला खेल: एटीएस की कार्रवाई से खुला बड़ा नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान की राजधानी जयपुर में अवैध हथियारों के खिलाफ एक बड़ी और चौकाते वाली कार्रवाई सामने आई है, जिसने कानून व्यवस्था और सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता को एक बार फिर साबित कर दिया है। एंटी टेरिस्ट स्क्वाड (एटीएस) की सूचना पर जयपुर पुलिस ने एमआई रोड स्थित एक लाइसेंसी गन हाउस पर छापा मारकर उसके मालिक मोहम्मद जहीरुद्दीन को गिरफ्तार किया है। इस कार्रवाई ने यह उजागर कर दिया है कि किस तरह लाइसेंस प्राप्त व्यवसाय की आड़ में अवैध हथियारों और कारतूसों का कारोबार संचालित किया जा रहा था। पूरे घटनाक्रम की शुरुआत एक खुफिया सूचना से हुई, जिसके आधार पर एटीएस और रामगंज थाना पुलिस की संयुक्त टीम ने सबसे पहले एमआई रोड स्थित 'शिकार गन हाउस' पर सच ऑपरेशन चलाया। इस दौरान दुकान के सभी दस्तावेजों और रिर्कांड को जब कर सील कर दिया गया, ताकि आगे की जांच में किसी प्रकार की

छेड़छाड़ न हो सके। प्रारंभिक जांच में ही कई संदिग्ध गतिविधियों के संकेत मिलने लगे, जिसके बाद पुलिस ने कार्रवाई को और आगे बढ़ाया। इसके बाद टीम सीधे आरोपी के रामगंज इलाके स्थित आवास पर पहुंची, जहां करीब तीन घंटे तक गहन तलाशी अभियान चलाया गया। इस तलाशी के दौरान जो बरामदगी हुई, उसने पूरे मामले को और गंभीर बना दिया। पुलिस को यहां से एक अवैध .22 बोर राइफल, 282 जिंदा कारतूस और एक टाइगर की खाल बरामद हुई। यह बरामदगी न केवल अवैध हथियारों के कारोबार की पुष्टि करती है, बल्कि वन्यजीव अपराध के एंगल को भी सामने लाती है, जो इस मामले को और अधिक संवेदनशील बना देता है।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, आरोपी लाइसेंसी गन स्टोर की आड़ में अवैध हथियारों और कारतूसों की खरीद-फरोख्त कर रहा था। यह एक संगठित नेटवर्क का हिस्सा हो सकता है, जिसमें कई अन्य



लोग भी शामिल हो सकते हैं। फिलहाल पुलिस इस पूरे नेटवर्क की तह तक जाने की कोशिश कर रही है, ताकि यह पता

लगाया जा सके कि यह अवैध कारोबार कितने बड़े स्तर पर फैला हुआ है और इसमें किन-किन लोगों की भूमिका है।

बरामद टाइगर की खाल को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा गया है। इससे यह स्पष्ट किया जाएगा कि खाल असली है

या नकली, और यदि असली है तो वह कितनी पुरानी है तथा उसे किस प्रकार हासिल किया गया। यदि यह खाल असली पाई जाती है, तो आरोपी पर वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत भी सख्त कार्रवाई की जा सकती है, जिसमें कड़ी सजा का प्रावधान है।

पूछताछ के दौरान आरोपी ने यह दावा किया है कि राइफल और टाइगर की खाल उसके पास काफी समय से रखी हुई थी, लेकिन पुलिस इस बयान की सत्यता की जांच कर रही है। एटीएस ने वहां दो आरोपियों—अमीन खान और बांगे—को गिरफ्तार किया था, जिनके पास से एक अवैध 12 बोर बंदूक, 30 कारतूस और

नकदी बरामद की गई थी। पूछताछ में इन आरोपियों ने खुलासा किया कि उन्होंने यह हथियार जयपुर के इसी गन हाउस से खरीदे थे। यही जानकारी इस पूरे नेटवर्क की कड़ी बन गई और इसके आधार पर जयपुर में यह बड़ी कार्रवाई संभव हो पाई। इस खुलासे के बाद एटीएस और जयपुर पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए गन हाउस मालिक को गिरफ्तार कर लिया। अब जांच एजेंसियां यह पता लगाने में जुटी हैं कि इस अवैध नेटवर्क के तार कहां-कहां तक जुड़े हुए हैं और क्या इसमें अन्य शहरो या राज्यों के लोग भी शामिल हैं।

यह मामला केवल अवैध हथियारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कानून व्यवस्था के लिए एक गंभीर चुनौती भी है। अवैध हथियारों का प्रसार किसी भी समाज में अपराध की दर को बढ़ा सकता है और इससे सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न होता है। ऐसे में इस प्रकार की कार्रवाई न केवल अपराधियों के खिलाफ सख्त

संदेश देती है, बल्कि आम जनता के बीच भी सुरक्षा का भरोसा कायम करती है। जयपुर में हुई यह कार्रवाई यह भी दर्शाती है कि सुरक्षा एजेंसियां अब पहले से अधिक सतर्क और सक्रिय हो चुकी हैं। खुफिया जानकारी के आधार पर त्वरित और सटीक कार्रवाई करना इस बात का संकेत है कि कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सभी एजेंसियां मिलकर काम कर रही हैं। फिलहाल, पुलिस की जांच जारी है और आने वाले दिनों में इस मामले से जुड़े और भी बड़े खुलासे हो सकते हैं। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इस अवैध कारोबार के पीछे कितनी बड़ी साजिश है और इसे पूरी तरह खत्म करने के लिए क्या कदम उठाए जाते हैं। यह घटना एक बार फिर यह याद दिलाती है कि कानून के रखवालों की नजर से बचना आसान नहीं है और अपराध चाहे जितना भी संगठित क्यों न हो, अंततः वह कानून के शिकंजे में आ ही जाता है।

राजधानी में रहस्यमयी मौतें और बढ़ती वारदातें: द्वारका के कमरे से लेकर प्रीत विहार की गोलीबारी तक डर का फैलता साया

दिल्ली, जिसे देश की राजधानी होने के साथ-साथ सुरक्षा व्यवस्था का मजबूत केंद्र माना जाता है, वहीं इन दिनों लगातार सामने आ रही घटनाएं लोगों के मन में कई तरह के सवाल खड़े कर रही हैं। ताजा मामला द्वारका जिले के उत्तम नगर इलाके का है, जहां एक किराए के कमरे में दो सगे भाइयों के शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। यह घटना जितनी रहस्यमयी है, उतनी ही चिंताजनक भी, क्योंकि शुरुआती जांच में मौत के कारण स्पष्ट नहीं हो पाए हैं।

शनिवार का दिन उस समय हड़कंप में बदल गया जब स्थानीय लोगों को सूचना मिली कि एक कमरे के अंदर दो लोगों के शव पड़े हैं। जैसे ही यह खबर पुलिस तक पहुंची, तुरंत टीम मौके पर पहुंची और दरवाजा खोलकर अंदर का दृश्य देखा, जिसने सभी को चौंका दिया। कमरे के भीतर दो पुरुषों के शव पड़े थे, जिनकी उम्र करीब 40 से 45 वर्ष के बीच बताई जा रही है।

पुलिस ने तत्परात दिखाते हुए दोनों शवों को कब्जे में लिया और फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया। एफएस्पल टीम ने कमरे की बारीकी से जांच की, हर छोटे-बड़े सबूत को इकट्ठा किया, ताकि इस रहस्य से पर्दा उठाया जा सके कि आखिर इन दोनों भाइयों की मौत कैसे हुई। कमरे के भीतर की स्थिति, सामान की अवस्था, दरवाजे-खिड़कियों की हालत—हर पहलू को ध्यान में रखते हुए जांच आगे बढ़ाई जा रही है।

शुरुआत में मृतकों की पहचान नहीं हो पाई थी, लेकिन बाद में पुलिस ने उनकी पहचान देवेद, जो मोहन गाडन का रहने वाला था, और अमित कुमार, जो उत्तम नगर के जेजे कॉलोनी इलाके का निवासी था, के रूप में की। जानकारी के मुताबिक, दोनों सगे भाई थे और कुछ ही दिन पहले उन्होंने नवादा इलाके में यह करारा किराए पर लिया था। इस पूरे मामले की सबसे चौंकाते वाली बात यह है कि शुरुआती जांच में उनके शरीर पर किसी तरह के स्पष्ट चोट के निशान नहीं मिले हैं। इससे मामला और भी उलझ गया है। यदि यह हत्या है,



तो बिना संघर्ष के कैसे हुई? और यदि आत्महत्या है, तो दोनों ने एक साथ ऐसा कदम क्यों उठाया? इन सवालों के जवाब फिलहाल पुलिस के पास नहीं हैं। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के असली कारणों का पता चल पाएगा। फिलहाल पुलिस हर एंगल से जांच कर रही है—चाहे वह हत्या का मामला हो, आत्महत्या हो या फिर कोई अन्य कारण। मोबाइल फोन, कॉल डिटेल्स, हाल के संपर्क और उनकी गतिविधियों की जांच की जा रही है, ताकि किसी भी संदिग्ध कड़ी को पकड़ा जा सके।

इस घटना ने स्थानीय लोगों के मन में डर का माहौल पैदा कर दिया है। जिस कमरे में कुछ दिन पहले तक सामान्य जीवन चल रहा था, वहीं अब एक रहस्य बनकर रह गया है। पड़ोसियों का कहना है कि उन्होंने इन दोनों भाइयों को ज्यादा जानने का मौका नहीं पाया था, क्योंकि वे हाल ही में यहां रहने आए थे और ज्यादा मेलजोल भी नहीं रखते थे।

इसी बीच, राजधानी के एक अन्य इलाके प्रीत विहार से भी एक चौंकाते वाली घटना सामने आई है, जिसने दिल्ली की सुरक्षा व्यवस्था पर और सवाल खड़े कर दिए हैं। शुकुवार देर रात एक क्लब के बाहर फायरिंग की घटना हुई, जिसमें 21 वर्षीय युवक समीर गंभीर रूप से घायल हो गया। बताया जा रहा है कि समीर अपने दोस्तों के साथ क्लब में गया हुआ था। इसी दौरान उसके दोस्त अहरम का किसी

अचानक बदला मौसम का मिजाज: दिल्ली-NCR से लेकर यूपी-बिहार तक आंधी, बारिश और ओलों का दौर, आखिर प्रकृति दे रही है क्या संकेत?

दिल्ली-एनसीआर समेत उत्तर भारत के बड़े हिस्से में इन दिनों मौसम ने जिस तरह करवट ली है, उसने आम लोगों से लेकर मौसम वैज्ञानिकों तक को चर्चा में ला दिया है। कभी तेज धूप तो कभी अचानक धिरे काले बादल, धूल भरी आंधियां, गरज-चमक के साथ बारिश और कई जगहों पर ओलावृष्टि—यह सब मिलकर एक असामान्य मौसमीय स्थिति का संकेत दे रहे हैं। जहां एक ओर लोग गर्मी से राहत महसूस कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इस अचानक बदलाव ने कई तरह की चिंताएं भी पैदा कर दी हैं।

दिल्ली-एनसीआर की बात करें तो यहां सुबह से ही आसमान में बादलों का डेरा देखा जा रहा है। दिन चढ़ने के साथ मौसम और अधिक अस्थिर हो जाता है। मौसम विभाग ने साफ तौर पर चेतावनी दी है कि दोपहर से लेकर शाम के बीच तेज धूल भरी आंधी चल सकती है, जिसके साथ हल्की से मध्यम बारिश, बिजली गिरने और तेज हवाओं की संभावना बनी हुई है। येलो अलर्ट जारी किया गया है, जो इस बात का संकेत है कि लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। बांटे दिन भी राजधानी में पूछताछ की जा रही है, ताकि आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जा सके। इन दोनों घटनाओं को अगर एक साथ देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि दिल्ली में अपराध की घटनाएं अलग-अलग रूपों में सामने आ रही हैं—कहीं रहस्यमयी मौतें, तो कहीं खुलेआम फायरिंग। यह स्थिति न केवल कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती है, बल्कि आम लोगों के मन में असुरक्षा की भावना भी पैदा कर रही है।

हालांकि पुलिस दोनों मामलों में सक्रियता से जांच कर रही है और जल्द ही खुलासा करने का दावा भी कर रही है, लेकिन तब तक ये घटनाएं लोगों के बीच चर्चा और चिंता का विषय बनी रहेंगी। राजधानी की रफ्तार और चमक-दमक के बीच छिपी ये घटनाएं यह याद दिलाती हैं कि सुरक्षा और सतर्कता कितनी जरूरी है। हर घटना अपने पीछे कई सवाल छोड़ जाती है, जिनका जवाब मिलना जरूरी है—ताकि न केवल दोषियों को सजा मिल सके, बल्कि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका भी जा सके।

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम चुनाव नजदीक आने के साथ ही भाजपा समेत अन्य राजनीतिक दलों के कार्यालयों में भी चहल-पहल शुरू हो गई है। भाजपा कार्यालय में तो मानो तूफान सा आ गया है, क्योंकि प्रत्येक वार्ड में आधा दर्जन उम्मीदवार नामांकन



प्रभावित हुआ। अधिकतम तापमान जहां 30 डिग्री सेल्सियस के आसपास बना हुआ है, वहीं न्यूनतम तापमान 20 डिग्री तक रहने की संभावना है। यह तापमान सामान्य से कम है, जो इस बदलाव का सीधा असर दिखाता है। इस पूरे घटनाक्रम के पीछे मुख्य कारण सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ को माना जा रहा है। यह एक ऐसी मौसमीय प्रणाली है, जो भूमध्यसागर के आसपास उत्पन्न होती है और उत्तर भारत में पहुंचकर मौसम को पूरी तरह बदल देती है। जब यह प्रणाली सक्रिय होती है, तो अपने साथ नमी, बादल, तेज हवाएं और इसी तरह का नजारा देखने को मिला था, जब आचानक तेज हवाएं चलने लगीं और धूल का गुबार पूरे वातावरण में छा गया। कुछ इलाकों में हल्की बूंदाबांदी भी हुई, जिससे मौसम सुहावना तो हो गया, लेकिन कई जगहों पर ट्रैफिक और जनजीवन

बाद कुछ दिनों तक मौसम शुष्क रहने की संभावना है और धीरे-धीरे गर्मी फिर से अपना असर दिखाना शुरू कर सकती है। अगर उत्तर प्रदेश की बात करें, तो वहां स्थिति और भी ज्यादा गंभीर मानी जा रही है। मौसम विभाग ने राज्य के कई जिलों में अरिच अलर्ट जारी किया है, जो येलो अलर्ट से एक स्तर ऊपर होता है। इसका मतलब है कि यहां मौसम का प्रभाव अधिक तीव्र हो सकता है। तेज आंधी, बारिश और ओलावृष्टि की संभावना जताई गई है। हवाओं की गति 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच सकती है, जो पेड़ों के गिरने, बिजली के खंभों के नुकसान और फसलों को भारी क्षति पहुंचाने के लिए पर्याप्त है। किसानों के लिए यह स्थिति चिंता का विषय बन गई है, क्योंकि इस समय कई फसलें पकने की अवस्था में हैं। 8 अप्रैल तक जारी रह सकता है। इसके

महानत पर पानी फेर सकती है। हालांकि, कुछ हद तक बारिश से मिट्टी में नमी बढ़ने का फायदा भी मिलता है, लेकिन अत्यधिक या असमय वर्षा नुकसानदेह साबित होती है।

बिहार में भी मौसम ने करवट लेने के संकेत दे दिए हैं। 5 अप्रैल से राज्य में मौसम पूरी तरह बदलने की संभावना जताई गई है। 5 से 7 अप्रैल के बीच तेज हवाओं के साथ बारिश होने की संभावना है, जिससे तापमान में गिरावट आएगी। अभी तक जो गर्मी धीरे-धीरे बढ़ रही थी, उसमें इस बदलाव के कारण राहत मिलेगी। लेकिन साथ ही तेज हवाएं और बिजली गिरने का खतरा भी बना रहेगा, जिससे सावधानी बरतना जरूरी हो जाता है।

मध्य प्रदेश में पहले से ही आंधी, बारिश और ओलावृष्टि का दौर जारी है। कई जिलों में पिछले दिनों ओले गिरे, जिससे फसलों को नुकसान पहुंचा। मौसम विभाग ने संकेत दिए हैं कि 6 अप्रैल तक यह स्थिति बनी रह सकती है। यहां भी पश्चिमी विक्षोभ का असर स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है। राजस्थान में भी स्थिति कुछ अलग नहीं है। कई जिलों में बारिश और ओलावृष्टि दर्ज की गई है। आमतौर पर यह राज्य गर्म और शुष्क मौसम के लिए जाना जाता है, लेकिन इस समय यहां भी बादल और बारिश ने लोगों को चौंका दिया है। मौसम विभाग का कहना है कि 10 अप्रैल तक लोगों को गर्मी और लू से राहत

मिलेगी। इसके बाद तापमान में तेजी से बढ़ोतरी हो सकती है और गर्म हवाएं चलने लगेंगी।

इस पूरे मौसमीय बदलाव का एक बड़ा पहलू यह भी है कि यह हमें प्रकृति के बदलते स्वरूप की याद दिलाता है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम के पैटर्न में लगातार बदलाव देखा जा रहा है। जहां पहले मौसम एक निश्चित क्रम में चलता था, अब उसमें अनिश्चितता बढ़ती जा रही है। कभी अचानक बारिश, कभी अत्यधिक गर्मी, तो कभी असमय टंड—ये सभी संकेत हैं कि पर्यावरण संतुलन प्रभावित हो रहा है।

लोगों के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे मौसम की इन चेतावनीयों को गंभीरता से लें। तेज आंधी और बिजली गिरने के दौरान खुले स्थानों पर जाने से बचना चाहिए, पेड़ों के नीचे खड़े नहीं होना चाहिए और सुरक्षित स्थानों पर रहना चाहिए। किसानों को भी अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। कुल मिलाकर, यह मौसम सिर्फ राहत या परेशानी का विषय नहीं है, बल्कि एक संकेत है कि हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने की जरूरत है। दिल्ली-एनसीआर से लेकर यूपी, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान तक फैला यह मौसमी बदलाव एक व्यापक प्रभाव का हिस्सा है, जो आने वाले समय में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

सूरत नगर निगम चुनाव: 'पुनरावृत्ति न हो' की मांग के साथ युवा चेहरों को अवसर देने में तेजी आई है

दाखिल करने पहुंचे हैं। वहीं दूसरी ओर, अन्य दल उम्मीदवार जुटाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसलिए, चाहे कोई भी पार्टी हो, अगर हम सामान्य तौर पर बात करें तो एक बात निश्चित है कि उनमें दोबारा टिकट नहीं दिया जाना, उसे दो-तीन बार चुने गए चेहरों को दरकिनारा कर नए चेहरों को

मौका देना चाहिए। यह समय की मांग है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो लोग बार-बार चुने जाते हैं, लेकिन प्रश्रवतखोरी, जबरन वसूली, छेड़छाड़, बलात्कार या किसी अन्य अपराध में लिप्त हैं, उन्हें दोबारा टिकट नहीं दिया जाना चाहिए, चाहे वे इसमें शामिल हों या न हों। यानी, पार्टी ने 'दोबारा

चुनाव न कराने' का फॉर्मूला अपनाया है, जिसमें अनुभवी युवाओं को प्राथमिकता दी गई है, जिन्होंने 20-30 वर्षों तक जमीनी स्तर पर पार्टी के लिए सक्रिय रूप से काम किया है और पार्टी को सत्ता के शिखर तक पहुंचाया है, साथ ही उन युवा चेहरों को भी जो दस वर्षों से अधिक समय से पार्टी के

साथ हैं और अपना समय पार्टी के लिए समर्पित किया है, और उन नए चेहरों को भी जिनमें देश सेवा की प्रबल भावना है। पार्टी ने युवा नेताओं को नेतृत्व सौंपकर उन्हें टिकट आवंटित किए हैं ताकि वे शहर और देश दोनों के लिए योगदान दे सकें। यही समय की मांग है।

“थोड़ी देर में आता हूं” कहकर निकले डॉक्टर की रहस्यमयी मौत: चतरा की खामोशी में गूंजता एक अनसुलझा सवाल

झारखंड के चतरा जिले से सामने आई एक दर्दनाक और रहस्यमयी घटना ने पूरे इलाके को झकझोर कर रख दिया है। एक साधारण-सी शाम, जो हर दिन की तरह सामान्य थी, अचानक एक ऐसी त्रासदी में बदल गई, जिसने न सिर्फ एक परिवार को उजाड़ दिया बल्कि पूरे समाज को सवाल के घेरे में खड़ा कर दिया। वेटनरी डॉक्टर जोगेंद्र यादव, जो रोज की तरह अपने घर लौटते थे, सब्जी लेकर आए और सहज भाव से अपने परिजनों से कहा—“खाना रेडी रखना, थोड़ी देर में आता हूं।” लेकिन किसी ने नहीं सोचा था कि यह उनका आखिरी वाक्य साबित होगा। शुकुवार की वह शाम, जो सामान्य लग रही थी, धीरे-धीरे चिंता में बदलने लगी। समय बीतता गया, रात गहराती गई, लेकिन जोगेंद्र यादव घर नहीं लौटे। परिजनों की बेचैनी बढ़ती गई। पहले उन्होंने सोचा कि शायद किसी काम में फंस गए होंगे, लेकिन जब देर रात तक कोई खबर नहीं मिली तो चिंता ने डर का रूप ले लिया। परिवार

के लोग उन्हें ढूँढने निकल पड़े, आस-पास के इलाकों में तलाश की, जान-पहचान वालों से पूछताछ की, लेकिन हर कोशिश बेकार साबित हुई। रात भर की बेचैनी और अनिश्चितता के बाद शनिवार की सुबह एक ऐसी खबर लेकर आई, जिसने सब कुछ बदल दिया। गांव के कुछ लोग, जो जंगल की ओर महुआ चुनने गए थे, उन्होंने सड़क किनारे झाड़ियों में एक शव पड़ा देखा। यह दृश्य इतना भयावह था कि वे तुरंत घबरा गए और पुलिस को सूचना दी। जब पुलिस मौके पर पहुंची और शव की पहचान हुई, तो यह पुष्टि हुई कि वह जोगेंद्र यादव ही थे। इस खबर के फैलते ही पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। एक शांत गांव, जहां आमतौर पर दिनचर्या सादगी से चलती है, अचानक भय और आक्रोश से भर गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। जिस व्यक्ति ने कुछ घंटों पहले ही घर लौटने का वादा किया था, वह अब निर्जीव अवस्था में झाड़ियों के बीच मिला—यह सच्चाई किसी के



लिए भी स्वीकार करना आसान नहीं था।

पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि वे हर संभव एंगल से जांच कर रहे हैं। कॉल डिटेल्स, लोकेशन ट्रैकिंग, आसपास के सीसीटीवी फुटेज (यदि उपलब्ध हो) और स्थानीय लोगों से पूछताछ—इन सभी माध्यमों से सुराग जुटाने की कोशिश की जा रही है। इस घटना ने एक बार फिर यह दिखा दिया है कि जिंदगी कितनी अनिश्चित हो सकती है। एक सामान्य-सी दिनचर्या, एक साधारण-सा वाक्य—“थोड़ी देर में आता हूं”—और फिर अचानक सब कुछ खत्म हो जाना। यह सिर्फ एक अपराध की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस दर्द, उस शून्यता और उस सवाल की कहानी है, जिसका जवाब हर कोई जानना चाहता है। अब पूरे इलाके की नजर पुलिस जांच पर टिकी हुई है। लोग इंतजार कर रहे हैं उस दिन का, जब इस रहस्य से पर्दा उठेगा और जोगेंद्र यादव को न्याय मिलेगा। लेकिन तब तक, यह घटना एक अनकही पीड़ा और अधूरी कहानी बनकर सबके दिलों में गूंजती रहेगी।

